Sociology
Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

महिलाओं में शैक्षणिक सशक्तिकरण : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

नेहा भारती • खुशबू कुमारी • जाकिया परवीण • रीता कुमारी

Received : December 2010
Accepted : February 2011
Corresponding Author : Rita Kumari

Abstract : *प्रस्तुत शोध का उद्देश्य ''महिलाओं में शैक्षणिक सशक्तिकरण'' का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन करना है। उपर्युक्त समस्या के प्रस्तुतीकरण के लिए परिकल्पनाएँ उभर कर सामने आयी है कि सैद्धान्तिक रूप से शैक्षणिक सशक्तिकरण द्वारा महिलाओं की स्थिति एवं लिंग आधारित श्रम - विभाजन के परिवर्तित स्वरूप को समाज ने समसामयिक रूप से बहुत हद तक स्वीकार किया है विशेषकर परिवार में स्त्री-पुरुष संबंधों में विमुखता व तनाव का दृष्टिकोण बदला है। प्रस्तुत शोध विषय प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों द्वारा सिपारा क्षेत्र की महिलाओं का शैक्षणिक सशक्तिकरण द्वारा होने वाले प्रभावों को प्रत्यक्ष रूप से समझने के लिए 100 महिलाओं का सर्वेक्षण कार्य किया गया। महिलाओं की स्थिति व पहचान, साक्षरता दर, शैक्षणिक पुनर्गठन, एवं सशक्त प्रभावी प्रबंधन, जातिगत स्थिति, महिला शिक्षा के प्रति पुरूषों की सहभागिता, स्वास्थ्य के स्तर पर महिलाओं की जागरूकता, लैंगिक श्रम-विभाजन में समानता के स्तर का अध्ययन किया गया। स्पष्टत: परिणामों के आधार पर महिलाओं के शैक्षणिक सकारात्मक मनोवृति द्वारा सफल निर्णय लेने की क्षमता, सशक्तिकरण का एक बड़ा मानक है । जिससे परिवार और समाज में समान अवसरों की प्राप्ति में वृद्धि हो रही है एवं पुरूषों की मनोवृति एवं उसके नकारात्मक सोच में बदलाव भी पाए गए है। उपरोक्त निष्कर्ष व सुझाव से स्पष्ट है कि शैक्षणिक सशक्तिकरण की भूमिका स्त्री-पुरुषों के जीवन का एक अविराम चुनौती है। आज आवश्यकता है, महिलाओं मे अध्ययन एवं ग्रहणशीलता के सवाल पर शैक्षणिक गतिशीलता में गुणात्मक वृद्धि करने की, साथ ही महिलाओं की स्थिति एवं विशेषाधिकार को सशक्त बनाने एवं आत्मनिर्भरता के लिए शिक्षा सिद्धान्त को स्वीकार करने की है।*

शब्द कुंजी :- *सशक्तिकरण, समसामयिक, पुनर्गठन, प्रभावी प्रबंधन लैंगिक-श्रमविभाजन, ग्रहणशीलता, गुणात्मकता विशेषाधिकार।*

नेहा भारती
B.A. III year, Sociology (Hons.), Session: 2008-2011,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

खुशबू कुमारी
B.A. III year, Sociology (Hons.), Session: 2008-2011,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

जाकिया परवीण
B.A. III year, Sociology (Hons.), Session: 2008-2011,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

रीता कुमारी
Assistant Professor, Department of Sociology,
Patna Women's College, Bailey Road,
Patna – 800 001, Bihar, India
E-mail :

परिचय

महिलाओं में सशक्तिकरण का मूलभूत साधन शिक्षा की प्रक्रिया है, जो जीवन की एक आवश्यकता भी हैं। शिक्षा वह उपकरण है, जिससे समाज में महिला सशक्त होकर समान क्षमता, कौशल व ज्ञान का विकास अर्जित करती है। शैक्षणिक सशक्तिकरण का तात्पर्य, विषमता, स्तरण, सोपानक्रम, अधीनता, हिंसा, अस्पृश्यता तथा अभाव को मिटाने वाली एक सामाजिक प्रक्रिया है।

मूलत: 1991–2001 के दौरान आँकड़ा दर्शाता है कि साक्षर पुरूषों के अनुपात में वृद्धि हुई है, साथ ही महिलाएँ साक्षरता के प्रति पहले से अधिक जागरूक भी हुई हैं।

2001 की जनगणना के अनुसार	कुल अनुपात में
भारत में कुल साक्षरों की संख्या - 56,06,87,797	64.8%
साक्षर पुरूषों की संख्या - 33,65,33,716	75.3%
साक्षर स्त्रियों की संख्या - 22,41,54,081	53.7%

अर्थात् पुरूषों से महिलाएँ (75.3%-53.7%=21.6%) साक्षरता के मामले में पीछे हैं फिर भी उनकी शैक्षणिक भागीदारी की स्थिति में व्यापक बदलाव आया है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य शिक्षा द्वारा महिलाओं की चेतना का विकास एवं जागरूकता का अध्ययन करना है। उनके लिए ऐसी योजनाएँ बनाना, जिन्हें सरलता से क्रियान्वित किया जा सके। लिंग समानता को बढ़ाकर महिलाओं में आत्म निर्भरता व आत्म विश्वास तथा स्वरोजगार की दिशा में प्रेरित करना है। समाज में कितनी प्रतिशत महिलाएँ सशक्त हुई हैं, इसका पता लगाना भी इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

परिकल्पना

शैक्षणिक सशक्तिकरण द्वारा महिलाओं की स्थिति एवं लिंग आधारित श्रम-विभाजन के स्वरूप को परिवर्तन करने में कितना सफल हुआ है। परिवार में स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में विमुखता और तनाव का दृष्टिकोण बदला है। महिला सशक्तिकरण ने समाज के समसामयिक परिवर्तनों को प्रभावित किया है ।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध में, तथ्यों का संकलन प्राथमिक एंव द्वितीयक स्रोतों द्वारा सिपारा क्षेत्र की क्रमश: 100 महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति से संबंधित जीवन के विभिन्न पहलुओं का साक्षात्कर विधि द्वारा संकलन किया गया।

परिणामों की परिचर्चा

प्राप्त परिणामों की विवेचना विभिन्न तालिकाओं के माध्यम से उत्तरदाताओं की संख्या एवं प्रतिशत के आधार पर की गयी है।

सारणी - 1

महिलाओं में शैक्षणिक स्थिति के आधार पर वर्गीकरण

सर्वेक्षण की गई महिला उत्तरदाताओं की संख्या	शैक्षणिक स्थिति								
	%	स्नातक		10+2		माध्यमिक		पूर्व माध्यमिक	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
100	100	15	15%	20	20%	30	30%	35	35%

सारणी- 1 में कुल 100 सहभागी महिला उत्तरदाताओं का शैक्षणिक स्थिति के आधार पर वर्गीकरण किया गया है जिसमें 100 महिलाओं में 15% महिलाएँ स्नातक स्तर की थीं, 20% महिलाएँ 10+2, 30% माध्यमिक स्तर की एवं 35% महिलाएँ पूर्व माध्यमिक शिक्षा प्राप्त पाई गईं।

सारणी - 2

जाति के आधार पर वर्गीकरण

सर्वेक्षण की गई महिला उत्तरदाताओं की संख्या	उच्च जाति (ब्राह्मण, कायस्थ)			निम्न जाति (यादव, कुशवाहा, मुसहर, नाई)	
	संख्या	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
100	100	35	35%	65	65%

सारणी- 2 में कुल सहभागी महिला प्रतिभागियों में जाति के आधार उच्च जातियों में क्रमश: ब्राह्मण, कायस्थ महिलाओं की संख्या करीब 35% तथा निम्न जातियों में यादव, कुशवाहा, मुसहर व नाई जातियों की महिलाओं की संख्या करीब 65% पाई गयी । उपयुक्त सारणी के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि उच्च जाति की महिलाओं के साथ-साथ निम्न जातियों की महिलाओं में भी शिक्षा के प्रति जागरुकता बढ़ी हैं।

सारणी - 3

महिला उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति के आधार पर वर्गीकरण

सर्वेक्षण की गई महिला उत्तरदाताओं की संख्या	वैवाहिक स्थिति				
	प्रतिशत	वैवाहिक		अवैवाहिक	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
100	100	85	85%	15	15%

सारणी - 3 वैवाहिक स्थिति के आधार पर 85% महिलाएँ विवाहित पाई गईं तथा 15% महिलाएँ अविवाहित पायी गईं। उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि समाज में विवाह की आयु अभी भी निम्नता की स्थिति पर ही बनी हुई है, किंतु शैक्षणिक सशक्तिकरण के होने से भविष्य में विवाह की आयु बढ़ने की सम्भावना है।

सारणी - 4

महिला उत्तरदाताओं के व्यवसाय प्राप्त के आधार पर वर्गीकरण

सर्वेक्षण की गई महिला उत्तरदाताओं की संख्या	कार्यरत/व्यवसाय प्राप्त एवं गृहिणी की स्थिति				
	प्रतिशत	कार्यशील/व्यवसाय प्राप्त		गृहिणी	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
100	100	75	75%	25	25%

सारणी - 4 में महिलाओं की शैक्षणिक सशक्तता उनमें गृहिणी से व्यवसाय की ओर अग्रसरित कर रही है। अध्ययन के अनुसार 100 महिला सहभागी में 25% महिलाएँ शिक्षित, गृहिणी के रूप में पाई गई। अत: सारणी के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महिलाओं में सशक्तता बढ़ने से उसकी कार्यक्षमता एवं कुशलता भी विकसित हो रही है।

सारणी - 5

महिला शिक्षा के प्रति पुरूषों की सहभागिता के आधार पर वर्गीकरण

सर्वेक्षण की गई महिला उत्तरदाताओं की संख्या	महिला शिक्षा के प्रति पुरूषों की सहभागिता						
	प्रतिशत	पति		पिता व भाई		परिवार के अन्य पुरूष	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
100	100	55	55%	30	30%	15	15%

सारणी - 5 में कुल सहभागी महिला उत्तरदाताओं में शिक्षा के प्रति पुरूषों की सहभागिता के अध्ययन में करीब 55% महिलाओं को पति द्वारा शिक्षा में प्रेरणा मिली जबकि 30% महिलाओं को पिता और भाई द्वारा शिक्षा में प्रेरणा मिलीं और 15% महिलाओं को परिवार के अन्य पुरूष सदस्य द्वारा प्रेरणा प्राप्त हुई। सारणी के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महिलाओं को शिक्षित करने में समाज व सरकार के साथ- साथ उसके पति, पिता व परिवार की प्रेरणा भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

सारणी - 6

महिला उत्तरदाताओं के स्वास्थ्य जागरूकता के आधार पर वर्गीकरण

सर्वेक्षण की गई महिला उत्तरदाताओं की संख्या	स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता				
	प्रतिशत	कार्यरत महिला		गृहिणी	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
100	100	60	60%	40	40%

सारणी - 6 में कुल सहभागी 100 महिला उत्तरदाताओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के अध्ययन के दौरान 60% कार्यरत महिलाएँ अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक थीं एवं बाहरी कार्यों को स्वास्थ्यपूर्ण ढंग से निर्वहन कर रही थीं, जबकि 40% महिलाएँ जो गृहिणी मिलीं, वो स्वास्थ्य के प्रति उतनी जागरूक नहीं थीं, जितनी कि कार्यरत महिलाएँ थीं। उपर्युक्त सारणी के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शैक्षणिकता व जागरूकता में एक समन्वित सम्बन्ध है।

सारणी - 7

लैंगिक श्रम-विभाजन में समानता के आधार पर वर्गीकरण

सर्वेक्षण किए गए महिला उत्तरदाताओं की संख्या	लैंगिक श्रम-विभाजन में समानता का स्तर				
	प्रतिशत	कार्यरत/गृहिणी महिला लिंग में समानता		गृहिणी/कार्यरत महिला लिंग असमानता	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
100	100	70	70%	30	30%

सारणी - 7 में कुल सहभागी 100 महिला उत्तरदाताओं में श्रम-विभाजन में लैंगिक समानता के आधार पर पाया गया कि गृहिणी एवं कार्यरत महिलाओं में लिंग की समानता 70% है जबकि कुछ गृहिणी एवं कार्यरत महिलाओं में लिंग

की असमानता 30% के करीब अंकित की गई है। उपर्युक्त सारणी के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महिलाओं में शैक्षणिक सशक्तिकरण के बढ़ने से महिलाओं को समान अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

सारणी - 8

परिवार में बच्चों के पालन-पोषण व उत्तरदायित्व में पुरूषों के सहयोग के आधार पर वर्गीकरण

सर्वेक्षण किए गए महिला उत्तरदाताओं की संख्या	बच्चों के पालन-पोषण व उत्तरदायित्व में पुरूषों का सहयोग				
	प्रतिशत	हाँ		नहीं	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
100	100	60	60%	40	40%

सारणी - 8 में कुल सहभागी 100 महिला उत्तरदाताओं में परिवार में बच्चों के पोषण व उत्तरदायित्व में पुरूषों के सहयोग के आधार पर यह पाया गया है कि 60% महिलाएँ पुरूषों द्वारा सहयोग से सहमत थीं, किंतु 40% महिलाएँ बच्चों के पोषण व उत्तरदायित्व में पुरूषों के सहयोग से असहमत थीं। प्रस्तुत सारणी के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महिलाओं के शिक्षित होकर सशक्त होने से परिवार एवं समाज में माता-पिता के द्वारा बच्चों का पूर्ण विकास हो सकता है।

सारणी - 9

महिला उत्तरदाताओं का अंतिम निर्णय लेने के आधार पर वर्गीकरण

सर्वेक्षण की गई महिला उत्तरदाताओं की संख्या	अंतिम निर्णय लेने के आधार पर							
	प्रतिशत	स्वयं के प्रति निर्णय लेना		पति के द्वारा निर्णय लेना		परिवार के अन्य पुरूष सदस्य द्वारा निर्णय	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
100	100	60	60%	35	35%	5	5%

सारणी - 9 में कुल सहभागी 100 महिला उत्तरदाताओं में अंतिम निर्णय लेने के आधार पर यह पाया गया कि 60% महिलाएँ किसी कार्य क्षेत्र में स्वयं निर्णय लेती हैं, जबकि 35% महिलाएँ पति के द्वारा निर्णय पर आधारित हैं, जबकि 5% महिलाएँ परिवार के अन्य पुरूष सदस्यों के द्वारा अपने जीवन की गतिविधियों को संचालित कर रही हैं। उपर्युक्त सारणी के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया है कि शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकार के प्रति जागरूक हुई हैं तथा अपने कार्यों के प्रति स्वयं निर्णय लेने लगी हैं। इससे स्पष्ट है कि शैक्षणिक सशक्तिकरण ने महिलाओं को पति तथा परिवार पर आश्रित नहीं रखा है, बल्कि वह आर्थिक क्रिया-कलापों द्वारा भी अपनी सहभागितापूर्ण योगदान परिवार में दे रही हैं।

सारणी - 10

महिला उत्तरदाताओं की स्थिति व पहचान में वृद्धि के आधार पर वर्गीकरण

सर्वेक्षण की गई महिला उत्तरदाताओं की संख्या	महिला की स्थिति व पहचान में वृद्धि				
	प्रतिशत	हाँ		नहीं	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
100	100	80	80%	20	20%

सारणी - 10 में कुल सहभागी 100 महिला उत्तरदाताओं में स्थिति व पहचान में वृद्धि के आधार पर वर्गीकरण किए गए उसमें 80% महिलाओं को अपने कार्य क्षेत्र एवं परिवारों में स्थिति एवं पहचान प्राप्त हुई है किंतु अभी भी 20% महिलाएँ ऐसी मिलीं जो अपनी स्थिति से वंचित हैं। उपयुक्त सारणी के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शिक्षा द्वारा महिलाओं की स्थिति एवं पहचान को पाने में महिला स्वयं जिम्मेवार है। अथक प्रयास से ही वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पा रही है। सरकार द्वारा भी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से महिलाओं के लिये विभिन्न कार्य क्षेत्र में अथक प्रयास भी किये जा रहे है।

सारणी - 11

महिला उत्तरदाताओं के शैक्षणिक सरकारी सुविधाओं के प्राप्ति के आधार पर वर्गीकरण

सर्वेक्षण की गई महिला उत्तरदाताओं की संख्या	शैक्षणिक सरकारी सुविधाओं की प्राप्ति के स्तर				
	प्रतिशत	संतुष्ट		असंतुष्ट	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
100	100	40	40%	60	60%

सारणी - 11 में कुल सहभागी 100 महिला उत्तरदाताओं में शैक्षणिक सरकारी सुविधाओं की प्राप्ति के आधार पर यह

मानना है कि केवल 60% महिलाएँ ही विभिन्न शैक्षणिक सरकारी सुविधाओं से असंतुष्ट मिलीं। जबकि 40% महिलाएँ संतुष्ट थीं प्रस्तुत सारणी के आधार पर स्पष्ट है कि सरकार के द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए शैक्षणिक कार्य तो किये जा रहे हैं, किंतु समाज की सभी महिलाएँ उनसे लाभान्वित नही हो रही हैं। केवल निमित्त सूचनाओं के माध्यम से ही शिक्षा का कार्य संपन्न हो रहा है, जबकि विभिन्न प्रशिक्षणों की आधारशिला प्रकट दिखाई नहीं देती।

सारणी - 12

आरक्षण के स्तर पर वर्गीकरण

सर्वेक्षण की गई महिला उत्तरदाताओं की संख्या	आरक्षण के स्तर पर				
	प्रतिशत	असहमत		सहमत	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
100	100	80	80%	20	20%

सारणी - 12 में कुल सहभागी 100 महिला उत्तरदाताओं में आरक्षण के स्तर पर अध्ययन के दौरान 80% महिलाओं का यह मानना है कि शिक्षा में आरक्षण नही होना चाहिए। जबकि 20% महिलाएँ विशिष्ट शिक्षण संस्थान में प्रवेश के लिए आरक्षण से सहमत मिलीं। प्रस्तुत सारणी के आधार पर यह स्पष्ट है कि शिक्षित होकर महिलाएँ सामाजिक शैक्षणिक दृष्टि से अपने स्वयं के व्यक्तित्व के प्रति अधिक उत्तरदायी भूमिका निभा रही हैं।

प्राप्त सारणियों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महिलाओं में बढ़ती शिक्षा का अनुपात एवं आधुनिक प्रौद्योगिक शिक्षा ने महिलाओं को संस्कृति, उपसंस्कृति, उदारीकरण, पाश्चात्य संस्कृति, भूमण्डलीकरण, व्यवसायीकरण, अहमवादिता के रूप में प्रभावित किया है। भारतीय शिक्षा नीति में मानवतावादी दृष्टिकोण को अपनाया गया है। महिला साक्षरता अनुपात पुरूषों के अनुपात में (पुरुष साक्षर 75.7% – महिला साक्षर 53.7% = 21.7%) कम होने के बावजूद भी पुरूषों द्वारा महिलाओं के हर कदम पर उनके सकारात्मक दृष्टिकोण को नकारा नहीं जा सकता। अतः आज आवश्यकता है, महिलाओं में अध्ययन एवं ग्रहणशीलता के सवाल पर शैक्षणिक सकारात्मक आत्मनिर्भरता को स्वीकार करने की ।

निष्कर्ष एवं सुझाव

वर्तमान परिवेश में शैक्षणिक सशक्तिकरण की भूमिका स्त्री पुरूषों के जीवन की एक अविराम चुनौती है। पुरूषों के समान ऊँची शिक्षा, प्रतिष्ठा, अधिक वेतन, ज्यादा शक्ति और सम्मान दूर देशों की यात्र एवं उनकी मानसिकताओं में आंतरिक एवं बाह्य संघर्ष सामाजिक दृष्टि से अत्यंत क्रांतिकारी सिद्ध हुई है। विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत केन्द्र व सरकारों द्वारा व्यावहारिकता एवं समन्वित नीति से उनके जीवन में बदलाव के दृष्टिकोण देखे जा रहे हैं। उनकी परिस्थितियों एवं पहचान में परिवर्तन भी हुआ है।

महिला शिक्षा के विकास और निरक्षरता के उन्मूलन के लिए व्यापक नीतिगत संरचना ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986'' को निर्धारित की गयी।

वास्तविकता यह है कि एक व्यावहारिक और समन्वित नीति की सहायता से ही महिलाओं की समस्याओं को दूर कर उनके जीवन में बदलाव लाना संभव हो सकेगा । महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति को सशक्त करने में पुरूषों की सहभागिता के साथ-साथ प्रशासकों, शासकों, समाज सुधारकों तथा आम लोगों को भी मिलजुल कर काम करना होगा, ताकि शैक्षणिक विकास कार्य बाधित न होकर ऐच्छिक एवं स्वाभाविक बनाया जा सके। जिससे कि उपेक्षित महिला भी धीरे-धीरे व्यावहारिक तौर पर अपने अधिकार एवं सुविधाओं को प्राप्त कर सकेंगे । यह कार्य कठिन है, लेकिन असंभव नहीं ।

References :

Books :

Karuna, Ahmed (1947) : 'Women's Higher Education, Recruitment and Relevance', Vikas House, New Delhi.

Pathak, Abhijeet (1998) : Indian Modernity, Gyan Publicly House, New Delhi.

Singh V.N. & Janmejay (2007) : 'Bharat Me Samajik Andolan' (fifth edition), Vivek Prakashan, Delhi.

Singh, Yogendra (1999) : 'Bhartiya Samaj – Sanranchana aur Parivartan', Jawahar Publishers, New Delhi.

Tejaskar & Ojeskar (2009) : 'Samaj Karya', Bharat Book Cupe, Lucknow.

Magazines :

Pratiyogita Darpan (October 2007, June 2009, July 2009, November 2009, May 2010).

Kurukshetra – September, 2010

Social Welfare – August, 2010

Sulabh India – April, 2010

Newspapers :

Dainik Jagaran – August : 20.08.09

Hindustan Times – May : 2, 1999

Websites :

www.womenempwerment.com (date 9th November, 2010)

http://wed.nic.in/empwomen.htm (date 2nd November, 2010)

www.bih.nic.com (date 8th November, 2010)

http://gov.bin.nic.in/depts./planning development/ statistics/reptab98.pdf. (date 2nd November, 2010)

http://welcomebihar.com/bihar/biharliteracy.htm (date 2nd November, 2010)

संदर्भ की पुस्तकें

भारतीय समाज संरचना और परिवर्तन

भारत में सामाजिक आंदोलन	– वी० एन० एवं जनमेजय सिंह
महिलाओं की दिशा एवं दशा	– सुभाष घई
समाज कार्य	– तेजस्कर पाण्डेय एवं ओजस्कर पाण्डेय
सुलभ इंडिया	– अप्रैल 2010
कुरूक्षेत्र	– सितम्बर, 2010
समाज कल्याण	– अगस्त 2010

सिन्हा लाईब्रेरी

प्रतियोगिता दर्पण	– अक्टुबर 2007
प्रतियोगिता दर्पण	– जून 2009
प्रतियोगिता दर्पण	– जुलाई 2009
प्रतियोगिता दर्पण	– नवम्बर 2009
प्रतियोगिता दर्पण	– मई 2010
समाचार पत्र	– हिन्दुस्तान – दैनिक जागरण